गंधर्वि कथक नृत्यालय

gandharvinrutyalaya@gmail.com

+91 75885 79928

अ. भा. गांधर्व मंडल मुंबई
कथक नृत्य
विशारद प्रथम वर्ष परीक्षा

पूर्णांक – 250	**न्यूनतम् - 88**
शास्त्र – 100	**न्यूनतम् – 35**
क्रियात्मक - 150	**न्यूनतम् - 53**

शास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र

1. नाट्य की उत्पत्ति (भरत अनुसार), नाट्य का प्रयोग तथा नाट्य का प्रयोजन।
2. नव रसों की परिभाषा।
3. नायक के चार भेद _ धीरोद्धत, धीरललित, धीरोदात्त, धीरप्रशांत।
4. चार प्रकार की नायिका और उनकी परिभाषा _ अभिसारिका, खंडिता, विप्रलब्धा तथा प्रोषितपतिका।
5. दशावतार में मत्स्य, वराह, कूर्म तथा नरसिंह अवतार की कथा तथा उनकी मुद्राएं।
6. ताल के 10 प्राणों की व्याख्या।
7. भरतनाट्यम, मणिपुरी तथा कथकली नृत्य की जानकारी। इनो की वेशभूषा तथा वाद्यों का ज्ञान।
8. तीनताल, झपताल, धमार में आमद,बेदम तिहाई, फरमाइशी परन, तथा चक्रदार परन, त्रिपल्ली तथा कवित्त को लिपिबद्ध करना।
9. गुरु शिष्य परंपरा का महत्व
10. शिष्य के गुण तथा गुरु के प्रति उसके कर्तव्य

Gandharvi Kathak Nrutyalaya

gandharvinrutyalaya@gmail.com
+91 75885 79928

द्वितीय प्रश्न पत्र

1. रस की निष्पत्ति, स्थाई भाव, भाव, विभाव, अनुभव, व्यभिचारी भाव आदि की परिभाषा।
2. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान _ त्रिपल्ली, कवित्त, चक्रदार परन, कमाली परन, बेदम तिहाई, त्रिभंग, सुढंग, लागडाट, अनुलोम, प्रतिलोम, भ्रमरी, न्यास, विन्यास।
3. कथक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित गीत प्रकारों की व्याख्या_अष्टपदी, ध्रुपद, ठुमरी, चतुरंग, त्रिवट, तराना कजर, होरी, चैती।
4. कथक नृत्य में नवाब वाजिद अली शाह तथा रायगढ़ के महाराज चक्रधर सिंह का योगदान।
5. रासताल१३, पंचम सवारी१५, धमार१४, गजझंपा १५ में आमद, तिहाई, तोड़ा, चक्करदार परन, कवित्त आदि को लिपिबद्ध करना।
6. जीवनिया _ नटराज गोपी कृष्ण, कथक समराग्नि सितारा देवी, पंडित दुर्गालाल, गुरु कुंदनलाल गंगानी।
7. निबंध ज्ञान_१)राम तथा कथक २) ठुमरी का कथक नृत्य में संबंध।
8. नर्तक नर्तकी के गुण और दोष।

<u>क्रियात्मक</u>

सरस्वती वंदना।
तीनताल के अतिरिक्त झपताल में विशेष तैयारी।
गजझंपा या छोटी सवारी (पंचम सवारी) तथा रास और धमार में ठेके की ठाह, दुगुन, ठाठ, आमद, दो तोड़े, एक परन तथा एक कवित्त का प्रदर्शन।
गत निकास मैं आंचल, नाव, घुंघट के प्रकार।
पिछले वर्षों के सभी गतभावों का प्रदर्शन तथा द्रोपदी चीर हरण
ठुमरी भाव (शब्द, राग, ताल की जानकारी आवश्यक)।
एक तराना या त्रिवट किसी ताल में।
हाथ से ताली लगाकर सभी बोलो कि पढंत।
अभिसारिका, खंडिता, विप्रलब्धा प्रोषितपतिका नायिका पर गत या इनसे संबंधित पद या ठुमरी पर भाव नृत्य।
तीनताल या झपताल की तत्_कार मैं लडी या चलन।
अभिनय दर्पण का श्लोक "अंगीकम भूवनम यस्य"।
पिछले संत कवियों को छोड़कर अन्य किन्हीं दो संत कवियों के कविता या भजन पर भाव दिखाना तथा दोनों संत कवियों का परिचय देना।

<u>मंच प्रदर्शन</u>

स्वतंत्र रूप से विधिवत मंच प्रदर्शन अनिवार्य 20 से 30 मिनट तक।

Gandharvi Nrutyalaya